Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 2, Feb- 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 01/02/2021 Accepted on : 14/02/2021 Publication Date: 15/02/2021

मानवीय जीवन की समस्याएं एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण- गेब्रियल मार्सेल की दृष्टि से विवेचन

भीष्म नारायण सिंह (Bheeshm Narayan Singh)
शोधार्थी (Research Scholar), **दर्शन शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान, भारत**
Email - shekhawat.bheeshm @gmail.com

सारांश: प्रस्तुत लेख पाश्चात्य दर्शन की एक शाखा महाद्वीपीय दर्शन (Continental Philosophy) के विचारक गेब्रियल मार्सेल, के अस्तित्ववादी चिंतन के सम्बन्ध में है। आधुनिक मानवीय जीवन विज्ञान एवं विज्ञान के उपकरणों (मोबाइल एवं सोसल मीडिया) से पूरी तरह घिर गया है। व्यक्ति अपनी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं नैतिक समस्याओं का समाधान सूचना प्रोद्योगिकी के माध्यम से ढूँढता है यहाँ तक कि व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक समस्याओं के लिए भी तकनीकी पर आश्रित हो गया है। मनुष्य के इस प्रकार के अलगावपूर्ण एवं स्वयं से दूर जीवन को मार्सेल भग्न-जगत का जीवन कहते हैं जहां आध्यात्मिक अकुलाहट एवं चेष्टा को एक समस्या माना जाता किन्तु मनुष्य में निहीत आध्यात्मिक तत्त्व समस्या नहीं अपितु रहस्य है जिसका समाधान बाहर नहीं है अपितु अंतस, आन्तरिकता या आत्मनिष्ठता में है।

मुख्य शब्द: भग्न जगत (**Broken World**), क्रियात्मक मनुष्य (**Functional Man**), हताशा (**Despair**), रचनात्मक समर्पण (**Creative Fidelity**), आध्यात्मिक उन्नयन (**Spiritual Evolution**)

प्रस्तावना:

प्रस्तुत लेख में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वर्तमान युग की अंध-तकनीकी शासित यांत्रिक जीवनशैली से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं पर विचार करने का प्रयास किया गया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अविचारित स्वीकृति के फलस्वरूप अनेक समस्याओं का उदय हुआ है। जिनमें प्रमुख समस्या यह पूर्वाग्रह है कि विज्ञान एवं वैज्ञानिकता को जीवन के समस्त पक्षों पर समान रूप से लागू किया जा सकता है। लेख के प्रथम भाग में उक्त समस्या को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। लेख के दूसरे भाग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा इसकी कमियों पर अस्तित्ववाद के महत्वपूर्ण विचारक गेब्रियल मार्सेल के विचारों को रखा है। उनके कुछ सिद्धांतों के माध्यम से यह दिखने का प्रयास किया है कि कैसे विज्ञान तथा वैज्ञानिकता मानवीय जीवन की समस्याओं को पूरी तरह से स्पर्श कर पाने में असमर्थ है। मानव जीवन के बाह्य भौतिक कलेवर से अधिक महत्वपूर्ण आन्तरिक तत्त्व है जिसका वैज्ञानिक समाधान न तो संभव है, न ही वांछनीय है। अतः एक अविचारित तथा अमर्यादित वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मानवीय जीवन का समग्र कल्याण (Wholistic Development) असंभव है अपितु इससे मानव का पतन ही होता है। समग्र विकास में आंतरिक विकास (Development of Internal) प्राथमिक है। वर्तमान युग में मूल्यों के पतन, जिसके कारण पर्यावरण संकट तथा मनुष्य का मनुष्य से द्वंद्व जैसी स्थितियों का जन्म हुआ है। इस पतन का एक मात्र कारण है- आन्तरिक सत्य, जिसे अध्यात्म (Spirit) भी कहा जाता है, से भागना। मार्सेल के दर्शन में इस आन्तरिक सत्य की ओर वापसी की बात की गयी है

शोध-पत्र का उद्देश्य:

१. दर्शनशास्त्र एवं विज्ञान के बीच भेद को प्रबलता से दिखाना
२. मानवीय जीवन के उन्नयन में विज्ञान एवं तकनीकी की नकारात्मक भूमिका का उद्घाटन
३. विज्ञान दर्शन के सहयोग एवं मार्गदर्शन से शिक्षा के उद्देश्य मानवीय जीवन में आत्मपूर्णता एवं आनंद के लक्ष्य की और बढ़ना
४. आध्यात्मिकता विषयक चिंतन को ज्ञान विधा के आवश्यक अंग के रूप में स्थापित करने हेतु तर्क

शोध-प्रविधि

फेनोमेनोलोजिकीय विवरणात्मक पद्धति

मुख्य-भाग

प्रथम भाग- वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा उससे उत्पन्न समस्याएं

प्रायः वैज्ञानिक दृष्टिकोण का मूलभूत अर्थ है- जीवन तथा जगत की प्राकृतिक विज्ञान के नियमों द्वारा व्याख्या करने का प्रयास। इसमें हर एक समस्या का वैज्ञानिक नियमों जैसे कि कारण-कार्य सम्बन्ध इत्यादि के माध्यम से विश्लेषण किया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण की मान्यता है कि प्रकृति तथा उसकी गतिविधियाँ यंत्रवत है। प्रकृति तथा जगत की यांत्रिक व्याख्या विज्ञान के नियमों से की जा सकती है। दार्शनिक चिंतन, विशेषतः समकालीन दार्शनिकों की दृष्टि में प्रकृति के नियमों को असंदिग्ध नहीं माना जा सकता। यहाँ तक कि स्वयं आधुनिक विज्ञान, विशेषतः Quantum Physics भी परम्परागत विज्ञान के विपरीत फिजिक्स के अधिकतर नियमों तथा सत्यों को सापेक्ष अथवा आकस्मिक मानने लगा है। ऐसे में मनुष्य तथा उसके क्रियाकलापों को वैज्ञानिक नियमों के आधार पर कैसे समझा जा सकता है, जिसकी संरचना में ही अनिर्धार्यता, आकस्मिकता, परिवर्तनशीलता तथा

विशिष्टता निहीत है। आधुनिक तकनीकी, विज्ञान का अनुप्रयुक्त रूप है, जिसमें तकनीक द्वारा लगभग हर समस्या के लिए विज्ञान का प्रयोग किया जाता है।

विज्ञान ने व्यक्ति के जीवन को बहुत सुविधाजनक बनाया है, व्यक्ति के लिए इसे धरती पर ही स्वर्ग के समकक्ष देखा जा सकता है। विज्ञान के निरन्तर विकास का प्रमुख कारण मानवीय समस्याओं को सीमित करना रहा है। किन्तु वर्तमान में वैज्ञानिकता अपने उत्कर्ष की चरम अवस्था में है तथा मनुष्य की समस्याएं भी चरम पर हैं। आदि काल से मनुष्य दैनन्दिन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्षरत रहा है। वर्तमान समय में उसकी समस्याओं का स्वरुप बदल गया है। पूर्व में उसकी समस्याएँ जीवन-यापन से सम्बंधित न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति तक ही सीमित थी, जबकि उत्तरोत्तर विज्ञान के विकास के साथ-साथ न्यूनतम आवश्यकताएं संतृप्त हो जाने के उपरान्त नयी आवश्यकताएं जुड़ती गयी। यह नई आवश्यकताएं हैं- समाज में एक-दूसरे की देखा-देखी तथा अचेतन भोगवादिता के कारण अनावश्यक सुख-सुविधाओं की चाह। पहले आवश्यकताएं थी किन्तु अब लोभ है। मनुष्य इस बदले हुए स्वरुप को समझ ही नही पा रहा। उसने जिस प्रकार अभी तक वैज्ञानिक दृष्टि से अपनी मूलभूत भौतिक आवश्यकताओं को देखा तथा उनकी पूर्ति के लिए मार्ग खोजे उसी प्रकार वह वर्तमान में आन्तरिक जीवन सम्बन्धी समस्याओं को देख रहा है तथा वैज्ञानिकता की ताकत से समाधान ढूंढने में लगा हुआ है। किन्तु इस समस्या का स्वरुप वैज्ञानिक नही है अपितु यह आन्तरिक अथवा आध्यात्मिक है। विज्ञान तथा तकनीक की निरंतर वृद्धि के फलस्वरूप बढ़ती सुख-सुविधाओं के साथ-साथ व्यक्ति में मानसिक व्याधियों की भी निरन्तर वृद्धि यह स्पष्ट रूप से दिखाती है कि विज्ञान को एकांगी रूप से मनुष्य के जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जा सकता है।

औद्योगिक क्रांति के बाद के बाद के कुछ वर्षों में विज्ञान के प्रति आकर्षण में इस स्वाभाविक तथ्य की अवहेलना की गयी है कि विज्ञान जिस वस्तुनिष्ठता की बात करता है वह मानवीय जीवन के परिप्रेक्ष्य में संभव ही नहीं है। व्यक्ति दर व्यक्ति जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है। प्रत्येक व्यक्ति नितांत अद्वितीय है। ऐसी स्थिति में वैज्ञानिकता वस्तुनिष्ठता मनुष्य की वास्तविक समस्याओं को कभी भी निर्दोष रूप से ग्रहण नहीं कर सकती है। यदि विज्ञान तथा वैज्ञानिक नियमों को निरपेक्ष रूप से सत्य मान भी लिया जाये तो भी इसकी गति बाह्य तक है, भीतर नहीं। एक मानवीय जगत के लिए आवश्यक है कि मनुष्य के भीतर के सत्य तथा आन्तरिकता को देखा जाये। वस्तुनिष्ठ सिर्फ मशीन हो सकती हैं मनुष्य नहीं। मनुष्य को मशीन मान लेना वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सर्वाधिक अमानवीय पक्ष रहा है, जिसे दूर करने के लिए आवश्यकता है मनुष्य की मनुष्यता को वापस लाने की। ऐसा तभी सम्भव हो पाएगा जब बाहरी तथा सतह जीवन से आतंरिक एवं आत्मनिष्ठता के जीवन में प्रवेश करेंगे। अर्थात बाह्य वस्तुनिष्ठता की सीमाओं को पहचान कर भीतर की विविधता का साक्षात्कार करेंगे।

द्वितीय भाग- समस्याओं के समाधान हेतु गेब्रियल मार्सेल की दृष्टि

दर्शन के इतिहास में अस्तित्ववाद मुख्यतः कला एवं साहित्य के माध्यम से विकसित हुआ है। अस्तित्ववाद मूलतः जगत एवं मनुष्य जीवन में संगति तथा निरन्तरता का निषेध करता है तथा यह प्रदर्शित करता है कि जो संगति हमें दिखाई दे रही है वह वास्तविक नहीं हैं अपितु वैचारिक कोटियों से कृत्रिम रूप से निर्मित है। अतः जब प्रकृति में एकरूपता नहीं है तो मनुष्य जिसका स्वरुप ही है विशिष्टता, में कोई निरन्तरता तथा एकरूपता ढूंढना तर्कतः व्याघाती है। यदि प्रकृति में एकरूपता मान भी ली जाए तब भी मनुष्य के व्यवहार को ऐसा नहीं मान सकते।

यहाँ मेरा प्रयास वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आलोचना प्रस्तुत करते हुए प्रतिबौद्धिकता, अनिर्धार्यता, तथा आकस्मिकता को स्वीकार किये जाने की आवश्यकता को दिखाना है। उत्तर-आधुनिक दार्शनिक ल्योटार्ड मनुष्य को असातत्यपूर्ण विचारों का प्रवाह कहते हैं। ल्योटार्ड के अनुसार वर्तमान समाज कंप्यूटराईज्ड समाज है जहां ज्ञान का स्वरुप सूचनात्मक ही बनकर रह गया है। गूगल ही सर्वज्ञ है तथा ऐसा कोई प्रश्न शेष नहीं होगा जिसका उत्तर प्राप्त न हो सके। अस्तित्ववाद एवं उत्तर आधुनिकता मानवीय-जीवन तथा जगत में सातत्य अथवा निरन्तरता ढूंढने वाले सभी प्रयासों को नकार देते हैं।

गेब्रियल मार्सेल तकनीकी जगत तथा उसमें मनुष्य के सम्बन्धों की *Mystery of Being, Being and Having, The Broken World* तथा अन्य दार्शनिक एवं साहित्यिक कृतियों में विस्तृत चर्चा करते हैं। मार्सेल तकनीकी जगत को भग्न-जगत (Broken World) की संज्ञा देते हैं। इस जगत के व्यक्ति के अन्य लोगों से 'पास रखना' (having) का सम्बन्ध हैं। जहाँ एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को वस्तु के रूप में (as an Object) देखता है तथा व्यवहार करता है। इस प्रथम देखने में ही मनुष्य होने के गौरव को न्यून कर दिया जाता है। ऐसे में, आध्यात्मिक जीवन की अकुलाहट, जिसे मार्सेल सत्तात्मक मांग (Ontological Exigence) कहता है, को दबा दिया जाता है। यह सत्तात्मक मांग है- निजता अथवा आत्मनिष्ठता (Subjectivity) के साक्षात्कार की अनुभूति। इस भग्न-जगत में व्यक्ति के समस्त सम्बन्ध उसकी क्रियात्मकता (Functionality) पर आश्रित है। समाज के प्रति दायित्व, परिवार के प्रति दायित्व में वह अस्तित्व के प्रति चिंतन ही नहीं कर पाता तथा व्यक्ति सूचना एवं तकनीक के जगत में अपनी आन्तरिकता को खो बैठता है। उसके लिए जगत में सभी सम्बन्ध एवं कार्य एक टाइम-टेबल द्वारा शासित होने लगते हैं तथा वह एक कार्यात्मक मनुष्य (Functional Person) बनकर रह जाता है।

भग्न-जगत का मनुष्य अंतस की समस्याओं का समाधान दृश्यमान जगत तथा उसके तकनीकी उपकरणों के माध्यम से ढूँढने का प्रयास करता है। सोशल मीडिया पर एक ट्रेंड देखने को मिलता है जहाँ अधिकाँश लोग स्वयं को व्यस्त रखने के जरिए ढूँढते हैं। उदाहरणार्थ सोशल मीडिया पर लिंक्स शेयर किये जाते हैं जिनमें स्वयं को जानने, अपने मित्रों को जानने तथा आपके बारे में आपके संगी -साथी की सोच जानने के माध्यम बताये जाते हैं। इस प्रकार व्यक्ति अन्य चेतन सत्ताओं के व्यक्तित्व तथा उनसे सम्बन्ध को जानने के लिए एक ऐसे माध्यम (वैज्ञानिक उपकरण) को चुनता जो अनुभूतियों को यथार्थ रूप में चित्रित करने का दावा करते हैं तब जबकि अनुभूतियों का जगत ही चित्रण की सीमा के बाहर है। प्रमुख भाषा दार्शनिक विट्गेंस्टाइन ने भी भाषा की शब्दावली में जगत की निर्दोष व्याख्या की असम्भावना को देख लिया था तथा पूर्व में स्थापित अपने सिद्धान्त को त्यागकर मानवीय जीवन की जटिलता की भाषीय पदों में सटीक व्याख्या को अनुचित माना।

व्यक्ति अपनी प्रत्येक समस्या का निराकरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से करने का प्रयास करता है, यहाँ तक की अपनी आध्यात्मिकता से जुडी बातों का भी, किन्तु आध्यात्मिकता समस्या नहीं है अपितु रहस्य है, जिसका समस्या के रूप में समाधान तकनीक द्वारा संभव नहीं है। आध्यात्मिक उन्नयन (Spiritual Evolution) व्यक्ति की सत्तात्मक मांग है, जिसे तकनीकी जगत आच्छादित कर लेता है। मनुष्य निरन्तर स्व से दूर होता जाता है। सत्ता की मांग भग्न जगत में व्यक्ति की आन्तरिकता की मांग है, यह आन्तरिकता की मांग कोई मनोवैज्ञानिक अवस्था नहीं, अपितु मानवीय आत्मा का आन्दोलन है जो कि अस्तित्व की अनुभूति के साथ ही आरम्भ होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उत्पन्न मानवीय समस्याओं का समाधान-

तकनीकी जगत व्यक्ति को यंत्रों से घिरा हुआ एक और यंत्र बना देता है। अंततः ऐसा व्यक्ति अपने जीवन को निरर्थक पाता है तथा हताशा (Despair) से ग्रसित हो जाता है। मार्सेल में हताशा का अर्थ है- 'स्व' को खो देना (to loose one's ownself)। तकनीकी जगत में घिरे हुए मनुष्य के जीवन की अनिवार्य परिणति है अपनी वास्तविकता, अपने मूल स्वरुप को खो देना। मार्सेल हताशा को व्यक्ति की आध्यात्मिक पक्ष से दूरी के रूप में देखते हैं। इसके निवारण के लिए व्यक्ति की विचार प्रक्रिया का हिस्सा बन चुके वैज्ञानिक दृष्टिकोण को हटाकर अपने 'स्वत्व' के प्रति चेतन बनने की आवश्यकता है, जिसके लिए रचनात्मक समर्पण (Creative Fidelity) आवश्यक है। यह समर्पण व्यक्ति द्वारा आन्तरिकता को अनुभूत करने पर आता है, जिसके कारण व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को Having के रूप में न देखकर उनमें Being का साक्षात्कार कर पाता है। यह अनुभूति ही व्यक्ति को अन्य लोगों में भी विषयिता अथवा मानवीय गौरव का प्रत्यक्ष करा पाती है।

मार्सेल के अनुसार जगत तथा अस्तित्व में किसी भी ऐसी सत्ता को स्वीकार न करना, जिस पर कि अवलंबित हुआ जा सके, जगत तथा सत्ता को निरर्थक बना देता है। वे, इस भग्न जगत में स्थित मानवीय अस्तित्व की समस्याओं को समाप्त करने में आशा एवं विश्वास को अनिवार्य मानते हैं। मार्सेल के दर्शन में अस्तित्व तथा मानवीय जीवन एक उपहार है जो कि एक प्रेमपूर्ण प्रतिक्रिया का पात्र है, यह प्रेमपूर्ण प्रतिक्रिया है- रचनात्मक समर्पण। इसके अंतर्गत विषयी या मानव(The Individual) यह अनुभव करता है कि अस्तित्व असीमित विश्वास तथा श्रद्धा के योग्य है। आशा किसी वस्तु विशेष की प्राप्ति की आशा न होकर, जीवन तथा अस्तित्व की समुज्ज्वलता में विश्वास करना है। यह विश्वास इस बोध को जन्म देता है कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। साधारण इच्छा, आशा से भिन्न है क्योंकि साधारण इच्छाओं में किसी विशेष पदार्थ (प्रेयस) की मांग की जाती है। रचनात्मक समर्पण तथा आशापूर्ण जीवन की चरम परिणति है- आन्तरिकता का असीम विस्तार (Continuously Extending Internalness)। मार्सेल में यही ईश्वरीय अवस्था है। जब एक विषयी अन्य विषयी से आंतरिक रूप में ऐक्य की अनुभूति करता है तब विषयिताओं की साम्यावस्था (Communion of Subjectivity) प्राप्त होती है, जो कि व्यक्ति के तनावपूर्ण एवं एकांकी क्षणों में उसको सुदृढ़ करती है।

अतः मार्सेल में आशा तथा विषयिताओं के साम्यवाद द्वारा अन्य चेतन सत्ताओं के साथ आध्यात्मिक रहस्य को साझा करते हुए, विषयिता अथवा आन्तरिकता के विस्तारण से ईश्वरीय अनुभूति संभव हो पाती है। मार्सेल में 'ईश्वर' शब्द का एक अधिक स्वीकार्य, स्पष्ट एवं ईहलौकिक अर्थ प्रस्तुत किया गया है। यह ईश्वरीय अनुभूति एक विश्वास है जिसमें विषयी समकक्ष अन्य विषयी के साथ अपनी आन्तरिकता को साझा करता है जिसकी निष्फल खोज वह तकनीकी जगत में कर रहा था।

निष्कर्षतः

मानवीय जीवन की समस्याएँ इतनी जटिल हैं कि उनका पूर्ण वैज्ञानिक विश्लेषण संभव नहीं है तथा वैज्ञानिक दृष्टि केवल सतह तक सीमित रह जाती है। अतः यह मानना कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण समस्त समस्याओं का समाधान कर देने वाली जादू की छड़ी का नाम है, गलत है। मानवीय जीवन की वास्तविकता इस सतह के अंदर की गहराई है जिसे विज्ञान नहीं, बौद्धिकता नहीं बल्कि आन्तरिकता अथवा आध्यात्मिकता के माध्यम से पकड़ा जा सकता है। विज्ञान तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को साधन ही मानना चाहिए साध्य नही। वैज्ञानिकता को ही जीवन का आदि तथा अंत मानने से समस्याएं उत्पन्न होती है। इसे चलती भाषा में कहते हैं- "विज्ञान एक अच्छा नौकर है लेकिन खराब मालिक" (Science is a good servant but a bad master)। अतः मानवीय जीवन का मालिक भीतर है बाहर नहीं।

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

१. Marcel, Gabriel. *The Philosophy of Existence.* (Tr- Manya Harari), New York, Citadel, 1991.
२. Marcel, Gabriel. *The Mystery of Being.* (Tr- G-S- Fraser), London, The Harvill Press, 1950.
३. Marcel, Gabriel. *Creative Fidelity.* (Tr- Robert Rosthal), New York, Farrar, Strauss & Company, 1964.
४. Marcel, Gabriel. *Homo Viator – An Introduction to the Metaphysics of Hope*. (Tr- by Emma Craufurd & Paul Seaton), Indiana, St- Augustine Press, 2010.
५. Barrett, William. *Irrational Man*. New York, Anchor Books, 1990.
६. Kaufmann, W. *Existentialism from Dostoevsky to Sartre.* Cleveland, Meridian Books, 1968.